अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :- शोध का प्रमुख हिस्सा विश्लेषित अभ्यास करके उससे परिणाम प्राप्त कर प्रदत्तों कि व्याख्या करना होता है | सांख्यिकी का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर उनसे परिणाम प्राप्त करने हेतु करते है |

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के इस अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गयी है एवं विद्यालयों के विभिन्न विषयों के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में क्या - क्या समस्यायें आ रही है , आदि के बारे में ज्ञात किया गया |

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दोनों केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ा रहे माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा उनके विषयानुसार मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं का अध्ययन निम्नलिखित है |

हिंदी के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें

हिंदी के शिक्षकों को मूल्यांकन करते समय जो विद्यार्थी अत्यधिक कमजोर लेखन एवं हिंदी की मात्राओं का सही प्रकार से ज्ञान न होने के कारण समस्यायें होती है |

विज्ञान के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें:-

कॉपियों की अधिकता होने के कारण शिक्षकों को मूल्यांकन करते समय कठिनाई होती है और विद्यार्थी सही प्रकार से लेखन एवं भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते है उनका मूल्यांकन करने में समस्यायें होती है |

गणित के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें :-

जो विद्यार्थी अत्यधिक कमजोर होते है और जो विद्यार्थी लेखन एवं भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते है उनका मूल्यांकन करने में शिक्षकों को समस्यायें होती है |

सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें :-

जो विद्यार्थी अत्यधिक कमजोर होते है जिन्हे अकसर ज्ञान नहीं होता है और जिस विद्यार्थी के पालक का सहयोग नहीं होता | जो विद्यार्थी भाषा एवं मानचित्र नक़्शे का सही प्रकार से प्रयोग करना नहीं जानते, जिन विद्यार्थियों में इसका आभाव है , उनका मूल्यांकन करने में शिक्षकों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है |

अंग्रेजी के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें :-

कविता एवं व्याकरण में शिक्षकों को मूल्यांकन करते समय समस्यायें होती है | समय की कमी होने के कारण भी विद्यार्थियों के मूल्यांकन में कठिनाई आती है |

आई.सी.टी. का प्रयोग मूल्यांकन विधि में करते समय शिक्षकों को आने वाली समस्यायें :-

आई.सी.टी. का प्रयोग काम शिक्षक ही करते है, और जो कभी करते है तो इंटरनेट एवं विद्युत् की समस्या होती है, जिससे समय की बर्बादी होती है |

संस्कृत के शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्यायें :-

संस्कृत में विद्यार्थी व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते है और जो विद्यार्थी अनुपस्थित रहते है उनका मूल्यांकन करने में कठिनाई आती है |

दिव्यांग विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने में आने वाली समस्यायें :-

जो विद्यार्थी शारीरिक रूप से दिव्यांग होते है सही प्रकार से लिखा नहीं पाते तथा जो विद्यार्थी शब्दों का सही उच्चारण एवं सम्प्रेषण नहीं कर पाते उनका मूल्यांकन करने में समस्यायें होती है |

विषय वार गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मूल्यांकन विधियों का प्रयोग :-

विषयवार गुणवत्ता बढ़ाने के लिए गतिविधि आधारित शिक्षा का प्रयोग करते है एवं छात्रों के द्वारा परस्पर एक -दूसरे के कार्य के मूल्यांकन के द्वारा विषयवार गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है |

निष्कर्ष

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सभी विषयों में ज्यादातर शिक्षकों को जो कमजोर विद्यार्थी हैं और जो विद्यार्थी भाषा एवं लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं उन विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने में शिक्षकों को समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं |

अतः कमजोर विद्यार्थियों एवं जो विद्यार्थी लेखन एवं भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं उन पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं |